अध्याय – 1

व्यंग्य–विवेचन

अध्याय – 1

व्यंग्य–विवेचन

भूमिका :–

यद्यपि मनुष्य बुध्दिजीवी है, विज्ञानी है और जीवन के हरएक क्षेत्र में अग्रसर होने का प्रयास करता है फिर भी उसकी अपनी कुछ सीमायें होती हैं। ये सीमायें और कुछ नहीं बल्कि उसमें निहित दोष, अभाव, न्यूनतायें, मूर्खता आदि हैं। सजग लेखक मानव की इन विद्रुपताओं पर ध्यान देता है और एक ऐसी भाषा में उसको आकार देता है कि उस भाषा से व्यंग्य की निर्मिति तो जरूर हो जाती है, उससे मानव को चोट ही लगती है लेकिन खून बाहर नहीं निकलता है। व्यंग्य की ये विशिष्ट उपलब्धि है। व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य समाज की दुर्बलताओं को दूर करना है और साथ ही साथ उसे हँसाना और रूलाना भी है। व्यंग्य लेखक की भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। व्यंग्य लेखन अपने व्यंग्यबाणों से समाज को जरूर घायल करता है लेकिन साथ ही साथ उसका मार्गदर्शन भी करता है। साहित्य की जो नई विधायें ऊभर आयी है उनमें व्यंग्य को भी विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। आजकल हिंदी में भी व्यंग्य को व्यंग्य विधा के रूप में सम्मान मिला है। व्यंग्य का मानव जीवन में तथा साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्री.शरद जोशी के व्यंग्य नाटकों पर विचार करने से पहले व्यंग्य पर सोचना आवश्यक है। अत: व्यंग्य के सैध्दांतिक विवेचन को प्रतिष्ठापित करना इस अध्याय का प्रमुख उद्देश्य है।

व्यंग्य : शब्द प्रयोग और अर्थबोध :–

हिंदी में प्रयुक्त व्यंग्य शब्द अंग्रजी के सैटायर (Satire) का हिंदी अनुवाद है। हिंदी साहित्य कोश भाग – 1 के अनुसार "व्यंग्य नीति" के अंतर्गत कहा गया है कि व्यंग्य शब्द अंग्रेजी के सैटायर के आधार पर निर्मित शब्द है।[1] डॉ.माजदा असद का कथन है, "अंग्रेजी में बहुप्रचलित एक शब्द है, "सैटायर"। हिंदी के व्यंग्य शब्द से वही अर्थ ध्वनित होता

है जो सैटायर से। इसका विकास लैटिन भाषा के "सैतूरा" शब्द से हुआ है। पुराने जमाने में "सैतूरा" शब्द से आशय पर निन्दा से लिया जाता था। आज सैटायर शब्द का प्रयोग समाज में छिपी बुराइयों और विसंगतियों को उजागर करने के लिए किया जाता है। यही व्यंग्य से ध्वनित होता है। मानव--चरित्र की दुर्बलताओं को उजागर कर उन पर प्रहार करते हुए समाज के खोखलेपन का पर्दाफाश करना ही इस शब्द के मूल में निहित भाव है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विभिन्न प्रकार की विसंगतियों पर कुठाराघात करते हुए उन्हें समाज से दूर करने का प्रयास करना, समाज में फैले हुए असन्तुलन को हटाकर सुधारने की कोशिश ही व्यंग्य कहलाती है।"[2]

द कन्साइज ऑक्सफर्ड डिक्शनरी में व्यंग्य (Satire) शब्द के कुछ अर्थ इस प्रकार दिए गए हैं (1) किसी व्यक्ति की मूर्खता अथवा दोषों की निंदा करना अथवा उसपर उपरोधिक रूप में प्रकाश डालना व्यंग्य है।[3] (2) गद्य या पद्य में की गई व्यंग्यपूर्ण रचना। (3) व्यंग्य एक विधा है। (4) कोई ऐसी जिस जो खिल्ली उडाने लायक होती है। मेरियसम वेब्सटर्स कॉलेजीएट डिक्शनरी में व्यंग्य के दो अर्थ इस प्रकार दिए हैं – 1) मानव जाति के दुर्गण और मूर्खता को उपरोधिक शब्दों में अथवा घृणात्मक शब्दों में अभिव्यक्त करनेवाला रचनात्मक साहित्य। (2) तीक्ष्णबुध्दि, उपरोध अथवा व्यंग्योक्ति का उपयोग (मानव में निहित) दोष, अवगुण अथवा मूर्खता को प्रकट करने के लिए और अविश्वसनीयता दिखाने के लिए करना।[4]

<u>व्यंग्य की परिभाषा</u> :–

व्यंग्य के बारे में हिंदी साहित्य में प्रसिध्द व्यंग्यकारों ने अपने अपने मतानुसार व्यंग्य की परिभाषा बनायी है। ये इस प्रकार है – प्रसिध्द व्यंग्यकार "हरिशंकर परसाई" के शब्दों में – "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता हे, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है ..... जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है जितनी गम्भीर रचनाकार की, बल्कि ज्यादा ही वह जीवन केप्रति दायित्व अनुभव करता है... अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।"[5]

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार " "व्यंग्य वह है जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला उठा हो। फिर भी कहनेवाले को उत्तर देना स्वयं को और उपहासास्पद बना लेता है।"[6]

वीरेंद्र मेंहदीरत्ता के मतानुसार – "शास्त्रीय दृष्टि से व्यंग्य मानव तथा जगत की मूर्खताओं तथा अनाचारों को प्रकाश में डालकर उनके उपहास्य अथवा घृणोत्पादक रूप पर आलोचनात्मक प्रहार करने में समर्थ एक साहित्यिक अभिव्यक्ति है।"[7]

हमारी धारणा है कि मानवजाति के दोषों, अभावों एवं विसंगतियों को दूर करने के लिए जिन शब्द बाणों का उपयोग हँसाने–रूलाने के साथ किया जाता है, उस अहिंसामूलक शस्त्र को व्यंग्य कहते हैं।

<u>व्यंग्य का स्वरूप</u> :–

डॉ.श्यामसुंदर घोष ने व्यंग्य के स्वरूप पर अच्छा प्रकाश डाला है।उनके अनुसार, "व्यंग्य गुस्से का अहिंसक रूप है। वह लाचार नहीं शक्ति है। व्यंग्य कोई अदना औजार नहीं है कि सब कोई इसका इस्तेमाल कर सके। इसके इस्तेमाल का एक अपना हुनर है, जो उससे वाकिफ है वह विरूप से विरूप स्थितियों में भी इसका कारगर इस्तेमाल कर सकता है। ऐसा इस्तेमाल कि एक व्यक्ति ही नहीं, कुछ लोग ही नहीं, पूरा का पूरा राष्ट्र झनझनाकर रह जा सकता है।"[8]

अपनी प्रसिध्द पुस्तक "व्यंग्य विवेचन" में वे लिखते हैं – "व्यंग्य चालू लेखन है या गम्भीर लेखन, इस बात को लेकर भी चर्चाएं होती हैं। व्यंग्य के भ्रष्ट या फैशनेबल होने की सम्भावनाएं, और सभी साहित्य रूप से बहुत अधिक रहती हैं। अपरिपक्व व्यंग्य–लेखक इसे विनोद, चुटकुला, मसखरापन आदि का पर्याय समझ लेते हैं। व्यंग्य में यह सब हो सकता है पर असल चीज है व्यंग्यकार की दूरगामी और मर्मभेदिनी दृष्टि। यदि वह उसके पास है तो इन चीजों का उपयोग करके भी वह हल्का या भ्रष्ट न होगा। व्यंग्य का एक अलक्षित स्वभाव ओर चरित्र भी होता है। वह पर्दे के पीछे रहकर भी अपनी ओजस्विता और तेजास्विता का संकेत

देता है। व्यंग्य लेखन योजनाविहीन लेखन न होकर योजना बध्द लेखन होता है। यह उद्वेलित मानस की अनुद्वेलित व्यूह–रचना है।"[9]

व्यंग्य के बारे में डॉ.बापूराव देसाई का मत – "व्यंग्य में सोच, समझ देने की क्षमता है। वह आहत तो करता है लेकिन विचलित नहीं करता। इसलिए व्यंग्य मेरी दृष्टि में केवल साहित्य की विधा नहीं है, वह जीवन की विधा है, विचारों की विधा है, नीति की विधा है, व्यवहार की विधा है, संसार भर की विधा है। व्यंग्य ऐसा उद्देश्य पूर्ण साहित्य है जो दुनिया में परिव्याप्त मिथ्या चारों, बाह्यचारों एवं पाप को मूल से नष्ट करना चाहता है।"[10] वे आगे लिखते हैं – "व्यंग्य भ्रष्ट व्यवहार करनेवालों के पीठ पर कोडों का प्रहार करता है। दकियानुसी समाज को सीधे मार्ग पर लाने के लिए व्यंग्य ने सरेआम नंगा कर दिया है। व्यंग्य अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के साधनों का उपयोग करता है। जैसे पैनापन, परिहास, तीक्ष्ण वैदग्ध, विडम्बनाएँ, अपकर्ष, विसंगति तथा अतिशयता आदि।"[11]

व्यंग्य के बारे में डॉ.संतोष तिवारी का कथन है – "मसलन व्यंग्य चेतना के बन्द दरवाजे पर एक जोरदार दस्तक है, व्यंग्य एक "पुरूषार्थी पहल" है जो जुल्म के ठिकानों पर शाब्दिक बमबारी करती है, उसमें जड़ व्यवस्था को परिवर्तन की हद तक आहत करने की सामर्थ्य होती है। व्यंग्य कुरेदता है, गुदगुदाता हे, खिझाता हे, रिझाता हे... वह प्रहार है और पर्दाफाश भी करता है।"[12]

शरद जोशी "मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ" पुस्तक में "अपनी बात" में लिखते हैं कि – "जिस देश के लोग हजारों वर्षों से अक्रमण, अन्याय, अत्याचार, भूख, गरीबी, बीमारी, निराशा सहन करते हुए अपने कतिपय मूल्यों, विश्वासों और आस्थाओं से जुड़े रहे हैं, उनमें जिन्दा रहने के लिए सेंस ऑफ ह्यूमर, कोई मस्ती जरूर रही होगी। अब यदि उन्हीं मूल्यों, विश्वासों और आस्थाओं से जुड़ा साहित्य सामान्य जिन्दगी से भी जुड़ा है तो वह "सेंस ऑफ ह्यूमर" साहित्य में आएगा ही जो अन्याय, अत्याचार और निराशा के विरूध्द होते व्यंग्य में अभिव्यक्त होगा।"[13]

शरदजी का व्यंग्य साहित्य विद्यमान भारतीय समाज में क्रान्तिकारी बदलाव लाने के लिए संस्कार तथा प्रेरणा देता है। इनके साहित्य ने गद्य की एक सक्षम विधा को प्रतिष्ठा प्रदान की है। दुश्मन को सामने देखकर लक्ष्य के अनुरूप रचना में वैज्ञानिक दृष्टिकोन से ताकद देना शरदजी की खूबी है। हिंदी साहित्य के अन्य व्यंग्यकारों में दुर्लभ ऐसी शैली की विविधता जोशी के समग्र साहित्य में उपलब्ध है। व्यंग्य में इस दृष्टि से उनका विशेष योगदान है। बातों ही बातों में पाठकों को आत्मविश्वास में लेकर पौराणेक कथा, ऐतिहासिक प्रसंगों से "परायें पत्रों की सुगंध" जैसे रचना में व्यंग्यार्थ प्रस्तुत है। व्यंग्य विधा को शिल्प की दृष्टि से स्थान देनेवाले "व्यंग्य शिल्पकार" के रूप में जोशी की शिनाख्त है।[14] विषयों की विविधता तथा एक-एक चुटीले वाक्य से बॉम्ब सृदश्य शक्ति का प्रदर्शन करना शरदजी को अनूठी खूबी है। "सचिवालया – आइयें, यहाँ कुछ नहीं होगा। जो रद्दी कागज सब वहाँ है।"[15]

यहाँ राज्य के मुख्यमंत्रियों की कार्य-प्रणाली, प्रशासन, अन्याय, अत्याचार, गरीबों का दर्द, कथनी और करनी में अंतर, आश्वासन, बेशरमी, स्वार्थ, अकार्यक्षमता आदि प्रवृत्ति से सनित विषयों का विस्फोट किया है।[16] भारत जैसे कुर्सी प्रधन देश में स्वार्थ को लेकर झूठ, फरेब, ढोंग रचनेवाले बहुत होने के कारण शरदजीने ओवरसियर, इंजीनियर, ठेकेदार आदि के भ्रष्टाचार का राज खोल दिया है। राजनीतिक, प्रशासनिक, साहित्यिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि विविध विषयोंसे सम्बन्धित असंगति, विसंगति पर शरदजी ने उस्तरे से एक एक की नकाब खोल दी है।[17] एक जागृत व्यंग्यकार के रूप में शरद जोशी का हिंदी साहित्य सेवा में अनूठा स्थान है जिसे हिंदी जगत् कभी भूल न पाएगा।[18] व्यंग्य को ज्ञान की, अध्ययन की दृश्य और श्रव्य पध्दति से गरिमा प्रदान करने के लिए आजकल दूरदर्शन में भिन्न-भिन्न व्यंग्यपरक रचनाएँ प्रस्तुत कर आम जनता के घर-घर में निरक्षर, बच्चों से बूढों तक व्यंग्य विद्या को पहुँचाने का महनीय कार्य सबसे पहले शरदजी ने किया है।[19]

व्यंग्य और व्यंग्य–विधा :–

डॉ. बापूराव देसाई ने व्यंग्य को विधा के रूप में स्वीकृति देने पर काफी लिखा है। आज संसार के सभी देशों में व्यंग्य रचनाओं का प्रचलन उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। व्यंग्य की युगीन परम्परा अपनी अलग सिनाख्त रखती है। समूचे भारतीय साहित्य के अमृतमंथन से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि व्यंग्य परम्परा वेदों से होकर संस्कृत साहित्य में अपरोक्ष रूप में प्रभाव डालती हुई हिंदी साहित्य में पहुँची है। साहित्य की व्युत्पत्तिपरक परिभाषा अगर हम देखें तो – "साहित्यस्थ भावा:" के रूप में की जाती है। इसका तात्पर्य यही हुआ की साहित्य से समाज का हित सम्बन्ध सम्पन्न होना आवश्यक है इस पर जरा गौर कर देखो तो व्यंग्य विधा इस कसौटी पर खरी लगती है। व्यंग्य की ब्रीद सुधार है, सब में सुधार। इस अर्थ में परखें तो व्यंग्य के समीक्षक चाहे जो कहें लेकिन वह साहित्य की उचित, सशक्त विधा के रूप में निर्विवाद स्वीकृति है। जिस धारणा को साहित्य की अन्य विधा अभिव्यक्त कर पाने में असक्षम है उसे व्यंग्य बड़ी खूबसूरती . से कह पाता है।[20]

दुनिया के विकसित देशों में विशेषत: रूस, इग्लैण्ड, स्पेन, फ्रांस के वाड्.मय में व्यंग्य विधा को स्वीकृति इसके पूर्व ही सम्मानपूर्वक प्राप्त हो चुकी थी। समग्र साहित्य को वनागी के रूप में देखेंगे – अमेरिका के साहित्यिक मार्कट्वेन, रूस के व्यंग्यकार एंटन चेखव, इंग्लैण्ड के व्यंग्यकार आर्चिलेचस, इरस्मय, बायरन, जार्ज बर्नाड शॉ, जॉर्ज आखे आदि। ग्रीस साहित्य में सिमावाइड्स, हिप्पोनक्स, स्पेन सरहांटीज, फ्रांस में फ्रेंच के व्यंग्यकार व्होलटेयर आदि लब्ध्दप्रतिष्ठित व्यंग्यकार अपनी हुनर में प्रसिध्द रहे हैं।[21] व्यंग्य विधा को न केवल कलात्मक साहित्य के रूप में स्वीकृति निली बल्कि वह एक प्रमुख शक्ति के रूप में भी विस्तारित मान्यता तक पहुँच चुकी थी। राजनीति प्रशासन तथा दर्शन के क्षेत्र में कार्ल मार्क्स, एंजेल्स, और लेनिन के साहित्य में भी पैना व्यंग्य विविध मात्रा में प्राप्त है। कार्ल मार्क्स की "पॉव्हर्टी ऑफ फिलॉसफी" तथा एंजेल्स और लेनिन की विभिन्न रचनाओं में व्यंग्य विधा की ऐसी शक्तिशाली अनुकृति मिलती है जो तत्कालीन अन्य साहित्यकारों में मिलना मुश्किल है। इससे यही साबित होता है कि व्यंग्य को इन देशों में प्रमुख भाषाओं में दीर्घ–काल से मान्यता रही है।[22]

हास्य के भेद – हास्य के भेद के रूप में जिन तत्त्वों की चर्चा होती रही उन सबका सीधा सम्बन्ध व्यंग्य के साथ ही जोड़ते रहे। हास्य में तो केवल विनोद या मनोरंजन ही उद्देश्य है। जबकि व्यंग्य का उद्देश्य सुधा रहा। हँसी तो किसी के गिरने से भी आती है जबकि व्यंग्य तो दर्द से बन–ठनकर आता है। हास्य बहिर्मुखी है तो व्यंग्य अन्तर्मुखी है। हास्य का उपयोजन दर्द, गम, पीड़ा, भुलाने के लिए भी करते है तो व्यंग्य विकृति को भूलने के लिए प्रज्ज्वलित दर्द है।[23]

डॉ.श्यामसुन्दर घोष के मतानुसार व्यंग्य एक गंभीर मनोभाव है, मनोभाव ही नहीं, मनोदशा कहिए। व्यंग्य एक परिपक्व और स्थायी मानसिकता की उपज है। जब हम बहुत दीन–दुनिया देख लेते हैं, दर–दर की ठोकरें खा लेते हैं, देखने–सुनने और भोगने के बाद काफी चिन्तन–मनन कर चुकते है. तब इसमें व्यंग्य का "बोधिसत्व" उदित होता है। इसलिएक व्यंग्य के पीछे जो मानसिकता होती है वह एक परिपक्व ओर स्थायी मानसिकता होती है।[24] व्यंग्य लेखन अपने लेखन की किसी भी विधा में व्यंग्य को ही सर्वोपरि स्थान देता है। इसलिए वहां वस्तु–तत्व ही विधा–शिल्प के शीर्ष पर स्वर्ण–शिखर की तरह चमकता नजर आता है। जहां व्यंग्य किसी विधा से स्पष्ट, पुष्ट और कारागर होता है वहाँ वह उसे स्वीकार करता है। लेकिन जैसे ही कोई विधा उसके व्यंग्य को मलिन करती नजर आती है वह उसे झटके से परे फेंक देता है। व्यंग्य –लेखन शुध्द साहित्यिक लेखन न होकर रणमूलक लेखन है। व्यंग्य का एक अलक्षित स्वभाव और चरित्र भी होता है। वह पर्दे के पीछे भी अपनी ओजास्विता और तेजस्विता का संकेत देता रहता है। व्यंग्य लेखन योजना–विहीन लेखन न होकर योजनाबध्द लेखन होता है।[25]

<u>व्यंग्य–प्रेरणा</u> :–

व्यंग्यकार विविध भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। अतः उसकी प्रेरणा भी विविध रूपी होती है। कभी वह वैयक्तिक घृणा या हिकारत के लिए लिखता है, कभी खिल्ली उड़ाने के लिए कभी वह विद्वेष रहित भाव से सर्वसाधारण के कल्याणार्थ लिखता है।

व्यंग्यकार चाहे कितना ही छिपाये या दावा करे कि उसके मन में लक्ष्य के प्रति कोई द्वेष नहीं है, फिर भी उसके अचेतन में घृणा या द्वेष अवश्य कहीं न कहीं विद्यमान रहता है।[26] जहाँ पर तनिक भी मूर्खता, अनाचार या विसंगति है (जिसमें सुधार या बदलाव लाया जा सके) वहाँ व्यंग्य एकदम अपनी पकड़ करा लेता है और प्रहार कर बैठता है।[27]

व्यंग्यकार मूढ़ता का उपहास करना चाहता है, अनाचार की भर्त्सना करना चाहता है। वह उनको जड़ से मिटाने, बदलने या कम करने में अपना योगदान देता है।[28] व्यंग्यकार को विशाल शब्दसागर क भंडार, निरन्तर प्रवाहित हास्यकार, दृढ़निश्चयी और निष्ठावान, दूर-दूर की उड़ान भरनेवाला कल्पनाशील होना पड़ता है।[29] फूलों पर गुनगुनाती भ्रमरावली के स्थान पर लाश पर झपटते गिध्दों का समूह या धूल में लोटता खुजली से व्याकुल कुत्ता व्यंग्यकार का ध्यान अधिक आकर्षित करता है। व्यंग्यकार ऋषि के आश्रम में होते मंत्रोच्चार की अपेक्षा एक छैला की शेखी या एक राजनीतिज्ञ की पैंतरेबाजी से अधिक प्रभावित होता है, क्योंकि उसके लेखन की सही प्रेरणा यही है, जिनसे वह अपनी कृति का प्रेम और घृणा, स्नेह और हिकारत, सहानुभूति और हास्य के सम्मिश्रण द्वारा निर्माण करता है। मूल रूप में शोधन या परिवर्तन ही व्यंग्य की प्रेरणा होती है। व्यंग्यकार खतरे के सिगनल की भाँति कार्य करता है। वह प्रताड़ित करता है तो सावधान करने के लिए। वह रचनात्मक सलाह देता है और लीक बनाता है।[30]

व्यंग्य की भाषा :-

व्यंग्य-लेखक की भाषा में धार और नोक दोनों जरूरी हैं। कभी वह नश्तर लगता है और कभी खंजर चुभोता है। यदि उसकी भाषा एकरस और एक ढंग की होगी तो वह यह काम बखूबी नहीं कर सकता।[31]

व्यंग्य भाषा में ग्राम्य प्रयोगों, स्लैगों और गालियों का भी एक निश्चित अनुपात होता है क्योंकि इसके बिना उसका काम नहीं चलता। गाली आखिर क्या? यह भाषा में हमारा

क्रोध, घृणा, वैर, जुगुत्सा ही तो हैं। इसलिए गालियों का एक–एक शब्द सामान्य भाषा के शब्दों से ज्यादा कारगर और व्यंजक होता है। कोई पात्र जब ठस्से के साथ "स्साला" कहता है तो इस एक शब्द से वह इतना कुछ कह देता है कि उसे पैराग्राफ लिखने की जरूरत नहीं होती।[32]

व्यंग्यकार के लिए तो गाली बुलेट की तरह है। जहाँ भाषा शब्दों की मोर्चाबन्दी करके विसंगतियों को अपने चपेट में ले लेती है। वहां गाली बुलेट बनकर छूटती है ओर कदाचार की नाक देती है। लेकिन गालियों का बेजा इस्तेमाल व्यंग्य में बिल्कुल जरूरी है।[33]

संक्षेपतः व्यंग्य की भाषा में सहज, स्वाभाविक, बोलचाल की भाषा, नये शब्दों का चयन, विचित्र प्रयोग, सजीव चित्रात्मकता, सशक्त प्रतीकात्मकता, ध्वन्यात्मकता, संक्षिप्तता, शब्दों की अन्तर भाषा का ज्ञान, मुहावरे तथा कहावतों का प्रयोग, विभिन्न अलंकारों का प्रयोग, मानवीकरण, कथोपकथन, लोक शब्दावली, अन्य भाषाओं की शब्दावली, वाक्य–विन्यास, विचार, सूक्तियाँ, अमर कोश शब्द, अशिष्ट तथा व्यंग्यज शब्द, विविध रस, सपाट बयानी, नावक के तीर सदृश्य प्रयोग, वचन वैदग्धता आदि अपने परिवेश से पाठकों से सीधा साक्षात्कार करवाती है। यह व्यंग्य भाषा की जीवंत अभिव्यक्ति का ही परिणाम है। इसीलिए व्यंग्य भाषा में ऐसी जादू आ जाता है जिससे पाठक भुलाने पर भी उसे नहीं भूल पाता है।[34]

<u>भावाभिव्यक्ति का माध्यम : व्यंग्य</u> :–

व्यंग्य शब्द–शक्ति का एक अंग है, जो किसी व्यक्ति, समाज, वस्तु या स्थिति की विरूपता प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। मनुष्य भाषा के माध्यम से विरूपता–सम्बन्धी अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करता है। पर कभी–कभी स्वयं वाचक को यह अभिव्यक्ति, अभिप्रेत अर्थ में, पूर्ण अभिव्यक्ति अनुभूत नहीं हो पाती। वह अपने मन्तव्य के प्रकटीकरण से संतुष्ट नहीं हो पाता। वक्ता को रह–रहकर यही अहसास होता रहता है कि उसने विरूपता का उद्‌घाटन तो किया, पर उतने प्रभावी ढंग से नहीं जैसा कि उसका मानसिक प्रत्यय, अभिव्यक्ति के पूर्व मस्तिष्क में बना था। ऐसी स्थिति में मात्र भाषा – समर्थ भाषा से

ही काम नहीं चलता। वहां कथन की एक नयी प्रणाली अपनानी पडती है। कथन की यह भंगिमा ही व्यंग्य है।[35]

व्यंग्य विशिष्ट स्थितियों में, सार्थक अभिव्यक्ति के लिए एक आवश्यक उपादान है। व्यंग्य का सहारा लेकर हम उन विशिष्ट स्थितियों में, गूढाति गूढ़ भावों और विचारों की अभिव्यंजना करते हैं। व्यंग्य भाषा को अनेक अभिनव अर्थों से विभूषित करता है। जीवन–जगत् विरूपताओं की पूर्ण अभिव्यक्ति के निमित्त ही मानव ने व्यंग्य का अविष्कार किया होगा। तदुपरान्त, उपयोगिता के फलस्वरूप, अभिव्यंजना के साधनों में व्यंग्य का स्थान बना। व्यावहारिक उपयोगिता के कारण उसका उत्तरोत्तर प्रचलन बढ़ना भी स्वाभाविक था। भाषा में पाये जाने वाले अनेक व्यंग्य–प्रधान मुहावरों के जन्म का यही रहस्य है।[36]

व्यंग्य अधिकतर कटु ही होता है। मधुरता से उसका कोई सरोकार नहीं। "प्रियवद" में उसका विश्वास नहीं। व्यंग्य की कड़वाहट तो अक्षुण्ण ही रहती है। मौलिक रूप में तो वह कडवा ही है। हास्य–व्यंग्य की जोड़ी चिरकाल से चली आ रही है। हास्य के समावेश से व्यंग्य की अचूकता में वृध्दि होती है। हास्य केवल मनोरंजन के लिए है, जबकि हास्य–मिश्रित व्यंग्य मनुष्य के सुधार व परिष्कार के लिए।[37]

व्यंग्य लेखक का अपना विशिष्ट क्षेत्र होता है। वह साहित्य की परिधि में आता है। व्यंग्य–लेखक अथवा व्यंग्य–कवि साहित्यिक रचनाओं – कृतियों के माध्यम से अपने को प्रस्तुत करता है। उसके अपने जैसे संस्कार होते हैं, वैसा ही उसका व्यंग्य होता है। उथला हो, गहरा हो, फूहड हो, शालीन हो, अश्लील हो, श्लील हो, बौध्दिक दृष्टि से विकसित व्यंग्य–लेखक हास्य का तिरस्कार करेगा। वह अधिकाधिक पैने और चुभनेवाले व्यंग्य का प्रश्रय लेगा उसके लेखन में गम्भीरता होगी। उसका स्वरूप आक्रामक होगा।[38]

कुछ लेखक जो वास्तविक जीवन में व्यक्ति और समाज की विरूपताओं के शिकार हुए हैं, उन्हें पैना व्यंग्य करने में ही कलात्मक संतुष्टि का बोध होता है। कुछ लेखक व्यंग्य को साधन के रूप में ग्रहण करते हैं। वे समाज–सुधार की भावना से प्रेरित होते हैं। उनकी व्यंग्य अपनी शिक्षा–दीक्षा तथा सामाजिक अनुभवों पर आधारित होती है। हास्य–लेखकों के बारे

तो ऐसा कहा जाता है कि यद्यपि उनका निजी जीवन अत्याधिक अभाव–ग्रस्त और कष्टमय होता है, पर फिर भी वे दूसरों को – समाज को – हंसाते हैं, उसे स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। अनेक लेखक और पाठक आज जीवन की असंगतियों और विरूपताओं को जब भोग रहे हैं तब उनकी झुंझलाहट, क्रोध, घृणा और क्रूरता व्यंग्य का शरीर धारण कर अवतारित हो तो वह स्वाभाविक ही है। व्यंग्य ऐसे लेखकों के जीवन का एक अंग होता है।[39]

वास्तव में व्यंग्य साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। व्यंग्य शब्द शक्ति का एक अंग माना जाता है। व्यंग्य में व्यंग्यकार अपनी भावाभिव्यक्ति को ही स्थान देता है। व्यंग्यकार जो कुछ देखता है, पाता है, अनुभव करता है उसका ही चित्रण व्यंग्य के रूप में कर्ता है। वस्तुतः व्यंग्य के द्वारा समाज के दोषों पर ही प्रहार किया जाता है और उसमें सुदार की गुंजाइश भी रहती है। डॉ. महेंद्र भटनागर के शब्दों में "व्यंग्य विशिष्ट स्थितिओं में, सार्थक अभिव्यक्ति के लिए एक आवश्यक उपादान है। व्यंग्य हा सहारा लेकर हम, उन विशिष्ट स्थितिओं में गूढातिगूढ भावों और विचारों की अभिव्यंजना करते है।"[40] डॉ. भटनागर का यह भी कथन है कि व्यंग्य लेखक हास्य का तिरस्कार करेगा। वह अधिकाधिक पैने और चुभनेवाले व्यंग्य का प्रश्रय लेगा। उसके लेखन में गम्भीरता होगी। उसका स्वरूप आक्रामक होगा। इसमें संदेह नहीं कि व्यंग्यलेखन की भावाभिव्यक्ति का सफल उपादान उसकी व्यंग्यधर्मिता है।

हिन्दी व्यंग्य की भाषा :–

व्यंग्य की भाषा में साफ–सुधरापन है साथ में व्यंग्यकार पाठकों पर भाषा की ऐसी जादू छा देते हैं जिसमें तुलनात्मक पध्दतियें से विदेशी सन्दर्भ रोचकता का प्रभाव जमा देना। रवीन्द्रनाथ त्यागी ने "गुलमुहर" में भाषा पर ऐसी ही मुहर लगा दी है। "ब्रिटन में राजकुमार चार्ल्स से पुलिस ने इस कारण पूछ–ताछ की क्योंकि उन्होंने एक घोड़े को ठोकर मारी थी जबकि हमारे इस अहिंसा प्रेमी देश में एक साधूने पूरा हाथी मार दिया और पुलिस ने कुछ भी तो नहीं किया। इस देश में हाथी क्या यदि इन्सान भी मार दिया जाए तो पुलिस कुछ नहीं करती।42

व्यंग्य की भाषा में भाषा का ऊपरी रूप ही नहीं बल्कि सतहीपन होता है। व्यंग्य की भाषा छुपा रूस्तुम जैसी होती है जो दुश्मन पर घात लगाये बैठती रहती है. और वक्त आने पर छापा मारती है। व्यंग्य की भाषा पाठकों को अस्वस्थ नहीं करती लेकिन आलम्बन को वह दु:ख, क्लेश, बेचैनी बढ़ाती है। व्यंग्य की भाषा में कोई भी शब्द या वाक्यांश व्यर्थ तथा अर्थहीन नहीं होता है। व्यंग्य के शब्द सज-सँवरकर तथा काट-छाँट कर एकदम नुकीले तथा अचूक फिट करके बैठाते है। व्यंग्यकार थोड़े ही शब्दों में बहुत कुछ अर्थ कहता है। थोड़े मे ज्यादा अर्थ प्राप्ति कर देना श्रेष्ठ व्यंग्य की विशेषता है। यह केवल भाषा पर निर्भर होता है। एक ही शब्द तथा वाक्य के द्वारा अनेकानेक अर्थ विस्तारित कर व्यंग्य की गरिमा बढ़ा दी जाती है।[43]

व्यंग्य की भाषा में अशिष्टता होती हैं, साथ में उसमें शरम संकोच, पक्षपात का व्यवहार बिल्कुल नहीं होता है। इस युग में किसी का विरोध करना पड़ता है, असहमत तथा असम्मति प्रदान करने हेतु आक्रमण भी करना पड़ता है, यह अशिष्टता किस सीमा तक जा सकती है। इस सन्दर्भ में हरिशंकर परसाई की रचना "एक लड़की ओर पाँच दीवाने" में दृष्टव्य है - गरीब मध्यवर्गीय परिवार की बड़ी लड़की है। पिता तस्करी नौकर है। पत्नी बच्चे पैदा करने में गांधारी की स्पर्धा करती है। गांधारी ने अंध पति से एक सौ बेटे पैदा कर दिये थे, इस औरत ने जवानी में ही आँखों वाले पति से चार पैदा कर लिए हैं। पाँचवे का शिलान्यास हो गया है। भरियल है। पूरा खाने को नहीं मिलता। शरीर में खून नहीं। हड्डी ही हड्डी है।[44]

<u>व्यंग्य का चरित्र</u> :-

डॉ.प्रभाकर माचवे के मनानुसार "चरित्र" शब्द बड़ा अनेकार्थी है। "स्त्रियश्चरित्रम्" (तिरिया चरित्तर) की तरह। मराठी में चरित्र का अर्थ है जीवनी। संस्कृत में चरितम् उसी अर्थ में है, रामचरितमानस। अंग्रेजी अर्थ "कैरेक्टर" चरित्रपर आरोपित किया गया। साहित्य में "व्यंग्य का चरित्र होना चाहिए" उसका अर्थ, व्यंग्य की अपनी शैली, अपनी मर्यादाएं, आचार संहिता होनी चाहिए। उसके अभाव में वह खोखला हो जाता है।[45]

हास्य और व्यंग्य :-

डॉ.श्यामसुंदर घोष को विख्यात व्यंग्यलेखक काका हाथरसी द्वारा दिनांक 14.8.1979 को लिखे गए पत्र के अनुसार हास्य और व्यंग्य पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है। काका हाथरसी इसके बारे में कहते है कि, व्यंग्य में यदि हास्य नहीं होगा तो वह कोतवाल का हंटर हो जाएगा। उनका कहना है कि इससे हमें फायदा भी होता है क्योंकि हास्य मिश्रित व्यंग्य सीधा प्रहार करता है और उससे चोट नहीं लगती।[46] इनका कहना है कि व्यंग्य में थोडा–बहुत हासय होना ही चाहिए। लेकिन डॉ.श्यामसुन्दर घोष का कहना है – मैं व्यंग्य को कोतवाल का हंटर नहीं मानता। कोतवाल का हंटर तो बड़ा प्रत्यक्ष है, वह दूर से ही नजर आता है। व्यंग्य तो छिपी गुप्ती है। व्यंग्य का लक्ष्य ही है चोट करना, कुरेदना और ऐसा करने पर जख्म पैदा न होगा यह कैसे हो सकता है? ऐसे व्यंग्य व्यंग्य न होकर व्यंग्य का भाई हास्य होगा।[47]

व्यंग्यकार विनाश के लिए विनोद का सहारा तो ले सकता है लेकिन तब क्या आप उसके विनोद को विनोद कहेंगे ?[48] लेकिन आज व्यंग्य को बहुत ही महत्त्व मिला है। पाठकों की कृपा प्राप्त करने के लिए पहले अखबार के पत्रों पर अपना हक कायम करना पड़ता है, जो व्यंग्य बखूबी कर रहा है। प्राय: सभी अखबारों में व्यंग्य के नियमित कॅालम चल रहे हैं।[49] अखबार के पन्नों के बाद पुस्तक के पन्नों पर अधिकार करना होता है, यह अधिकार भी हिंदी व्यंग्य ने आसानी से हासिल किया है। प्रत्येक वर्ष व्यंग्यविषयक कई–कई, कितनी–कितनी पुस्तकें प्रकाशित हो रही है, केवल व्यंग्य पत्रिकाएं ही कई–कई निकल रही है, व्यंग्य–विषयक संगोष्ठियां हो रही हैं। अब तो कुछ विश्वविद्यालय व्यंग्य विषयक विशेष पत्र भी अपने पाठयक्रम में रख रहें है।[50] इसी प्रकार आज व्यंग्य ने समाज में अपना स्थान पक्का किया है, साथ–साथ अपना अधिकार भी हासिल करके विजयी हो रहा है।

आज हास्य और व्यंग्य बिलकुल पृथक है। अब व्यंग्य अपने ही बलबूते पर सारा काम कर लेना चाहता है। हास्य उसकी सहायता के लिए आये, न आये यह गौण है। आज हास्यकार और व्यंग्यकार में मानसिकता में एक फर्क है। व्यंग्यकार तनाव में जीता है वह तनाव इस कारण कि सामाजिक विद्रूपताएँ और विशेषताएँ उसका जीना हराम किए रहती हैं जबकि

हास्य एक तनावरहित, अपेक्षाकृत शांत सहज जीवन जीता है। हास्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन या सामाजिक और सहृदय के चित्त का प्रसादन है जबकि व्यंग्य को कठिन भूमिका से जाना पडता है। उसे ज्यादा तत्पर, चौकना रहना पड़ता है। उसकी भूमिका ज्यादा कठिन, जटिल और विषम है। हास्य में व्यंग्य की आक्रामकता का निषेध है। व्यंग्यकार की मानसिकता के पीछे जो नफरत, गुस्सा, वेदना होती है वह हास्यकार की मानसिकता के मूल में प्रायः नहीं होती। हास्य व्यंग्य को सहायता नहीं करता। व्यंग्य को आज अपनी लड़ाई खुद लड़नी है।[51]

कई व्यंग्यकारों ने या आलोचकों ने हास्य और व्यंग्य को एक ही माना है, तो कई व्यंग्यकारों ने हास्य को अलग माना है, और व्यंग्य को अलग विधा माना है। उनका कहना है कि हास्य ओर व्यंग्य एक नहीं है। वे एक–दूसरे से बिलकुल अलग है। क्योंकि हास्य का काम केवल लोगों को निर्मल आनंद देना ही होता है, उसमें मनोरंजकता अधिक रहती है। लेकिन व्यंग्य का काम लोगों को, उनके समाज, राजनीति आदि में जो विसंगतियाँ, विकृतियाँ, कुरूपतायें हैं, दिखाना होता है। इसलिए व्यंग्य और हास्य अलग–अलग ही हैं। एक समय था जबकि हिंदी में व्यंग्य शब्द की शुरूआत हुई थी. और किसी ने उस वक्त व्यंग्य लिखने की कोशिश की तो उनके व्यंग्य को हास्य ही समझा और कहा गया। ये स्वाभाविक बात ही है क्योंकि उस वक्त हास्य का ही महत्व ज्यादा था। इसलिए व्यंग्य उसी के नाम पर चलता था। कई सालों बाद धीरे–धीरे व्यंग्य का प्रसार–प्रचार बढ़ता गया। व्यंग्य अब हास्य के बराबर का दर्जा पाने लगा। व्यंग्य को प्रतिष्ठा भी प्राप्त होने लगी। फिर वह समय भी आया जबकि व्यंग्य काफी आगे बाढ़ गया और हास्य उसकी तुलना में पिछड़ गया।[52]

हिंदी में आज हास्य और व्यंग्य का तीसरा स्थान है। हास्य बराबर ही जीवन और समाज का एक जरूरी हिस्सा रहा है, और रहेगा। व्यंग्य के साथ यह बात नहीं है। यह खास–खास मौके पर जीवन और समाज के लिए आवश्यक हुआ है और होता है। हास्य सामाजिक और मानसिक स्वास्थ का सूचक है। वह सहजता से उत्पन्न होता है। व्यंग्य इसके उलटा है। व्यंग्य सामाजिक असमानता, भ्रष्टता और विकृती का परिणाम है। इसलिए हास्य तब ज्यादा लिखा

जाता है जब समाज स्वस्थ, सामान्य और ठीक होता है। इससे स्पष्ट होता है कि हास्य और व्यंग्य एक नहीं हैं। व्यंग्य सक्रिय होता है तो हास्य स्थिरसा होता है।[53] सामाजिक विरूपता के मोर्चेपर व्यंग्य की जो भूमिका होती है वह ऊपर से जितनी भी छअ और निर्दोष मालूम होती हो, उसका लक्ष्य भेदन और छेदन होता है, प्रसादन या विनोद नहीं। हास्य परितृप्त मानस का स्फुरण है जब कि व्यंग्य अनुतप्त चित्त का प्रखर आक्रोश है। व्यंग्य लोगों को खटकता है, आलंकित करता है।[54]

व्यंग्य और हास्य के बारे में हिंदी व्यंग्यकार "प्रेमानारायण टंडन" का मत यह है कि, "हास्य के पुट से व्यंग्य मन भावना, रूचिकर और सहज बन जाता है और बुराइयों से संसार का त्राण करता है।"[55] अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।[56]

हास्य और व्यंग्य में मुख्य अन्तर लक्ष्य और लेखक ही दृष्टि के कारण है। हास्य में विसंगति चित्रण में लक्ष्य, पात्र हास्योद्रेक है। व्यंग्य में विसंगति चित्रण द्वारा विकृत स्थिति विकृत मनोवृत्ति, विकृत स्वीकृति पर प्रहार करना है। हास्य में विनोदी स्वभाववश विकृति का चित्रण है। व्यंग्य में गहरी सूझ–बूझ के परिणामस्वरूप विकृति का प्रदर्शन है। हास्य आत्मस्थ और परस्थ दोनों प्रकार का हो सकता है, परंतु व्यंग्य अधिकतर परस्थ ही होता है।[57] कुछ व्यंग्यकारों का मत है कि व्यंग्य में सहानुभूति का अभाव रहता है किंतुयह गलत हैं। व्यंग्य का उद्देश्य लक्ष्य में सुधार या परिवर्तन लाना है, उसमें सहानुभूति का भाव अवश्य रहता है। यह भाव इस प्रकार का होता है जैसा बच्चों की दुर्वृत्तियों में सुधार लाने के माता–पिता द्वारा उन्हें डाँटना या दण्ड देना।[58]

हास्य और व्यंग्य में भेद करनेवाली रेखाएँ इतनी सूक्ष्म हैं कि हास्य और व्यंग्य में अंतर की समस्या का समाधान ही नहीं हो पाया। हास्य का लक्ष्य मात्र हँसना, हँसाना है, जबकि व्यंग्य दुर्बलताओं तथा दोषों का उद्घाटन कर उन पर प्रहार करता है। व्यंग्य का कोई न कोई उद्देश्य होता है।[59]

व्यंग्य दायित्व

सामायिक जीवन की विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का पर्दाफाश करना रचना–धर्मिता का विशिष्ट अंग रहा है। व्यंग्यों का मुख्य लक्ष्य इन विडम्बनाओं पर आक्रमण करना होता है। हँसते–हँसते सच्ची बात कहना और विसंगति पर प्रहार करना व्यंग्य का उद्देश्य है जिनकी ओर भारतेन्दु काल से ही लेखक सतर्क रहे हैं। शासन की कमजोरियों, सामाजिक बुराइयों, धार्मिक चोंचलों, आर्थिक विषमताओं की समालोचना करना व्यंग्य का प्रधान क्षेत्र कहा जा सकता है। समाज में व्याप्त घूसघोरी, चोरबाजारी, स्वार्थपरता, दलबदलू राजनीति, भ्रष्ट राजनीति, लुटेरे, समाजसेवी, अवसरवादितापिय जन सेवक, नौकरशाही पर व्यंग्य का आघात होता है।[60]

व्यंग्यकार अपने उद्देश्य में तभी सफल हो जाता है जब वह अपने लक्ष्य की बौध्दिक और मानसिक गन्दगी की सफाई पर उसे नई दिशा की ओर मोड दे। व्यंग्यकार एक सूक्ष्मदर्शक यंत्र की भाँति दुर्बलताओं को दीर्घाकार रूप में समाज के सम्मुख प्राप्त करता है। उनकी पोल खोलकर बगुला भक्ति एवं ढोंग को निरावृत्त करता है। व्यंग्यकार उचित अनुचित के बीच की खाई को पाटना चाहता है।[61] व्यंग्यकार उन चैन की नींद सोनेवालों को, जिन्होंने विषमताओं से भाग्य की देन समक्ष समझौता कर लिया है या उनकी अपेक्षा कर उनके प्रति उदासीन हो गये हैं, झटका देकर विरोध के लिए जगाता है।[62] जब व्यंग्यकार सत्य का दावा करता है तो वह व्यक्ति और समाज को दुराचारों और पापाचारों से सावधान करता है। उसके सत्य प्रकाशन से कुछ का कल्याण होता है, और कुछ आहत होते हैं। आशा और निराशावादी व्यंग्यकारों के उद्देश्य भी उनकी विचारधाराओं पर आधारित होते हैं। आशावादी व्यंग्यकार नीरोग करने के लिए लिखता है, जबकि निराशावादी व्यंग्यकार ध्वंस करने के लिये। एक चिकित्सक है तो दूसरा जल्लाद। एक संसार के स्वस्थ रूप को देखता है तो दूसरा संसार को बुराई और अपराध का अखाड़ा समझता है।[63] वीरेन्द मेंहदीरत्ता के शब्दों में – "यदि व्यंग्यकार अपने लक्ष्य में सफल हो जाता है तो यही उसकी विजय है। सत्यनिष्ठ तर्कसंगत आवेग, प्रवाह, आत्मविश्वास व्यंग्य की सफलता के आधार होते हैं। श्रेष्ठ व्यंग्य में हासय पुट द्वारा तिक्तता

कम होकर तीक्ष्णता बढ़ जाती है। बीभत्स प्रदर्शन से विकृति दूर होती है। उपहास मिथ्याचार को हटाकर आत्म–बोध जगाता है।[64]

व्यंग्य का उद्देश्य / प्रयोजन :–

हिंदी के प्रसिध्द व्यंग्यलेखक नरेंद्र कोहली का कथन है – "हिंदी के व्यंग्य लेखन से अब सामान्यत: यह शिकायत की जाने लगी है कि वह अधिक से अधिक व्यावसायिक होता जा रहा है। जहां कहीं भी यह शिकायत देखने को मिली – वहां यह नहीं लिखा गया कि यह शिकायत किस व्यंग्यकार से है। पर कभी–कभी शिकायत सीधे मुझसे हुई है और उन पाठकों ने की है, जिन्हें मुझसे कोई द्वेष नहीं है। ऐसे अवसरों पर कई बार मैं सोचने पर बाध्य हुआ हूं कि यह व्यावसायिक होने की शिकायत क्या है। बात–चीत में पता यह चला कि व्यावसायिक होने से तात्पर्य यह है कि व्यंग्य का उद्देश्य समाज, देश तथा सरकार की विसंगतियों को उद्घाटित करना नहीं वरन् लोगों का मनोरंजन कर अपने लिए धनार्जन करना है। वे आगे कहते हैं कि कुछ लोगों के आक्षेप के बाव्जूद, अपने फिल्मी व्यंग्यों को मैं व्यावसायिक लेखन नहीं मान सका। मुझे सदा यह लगा है कि फिल्में भी हमारे समाज का उतना ही महत्वपूर्ण अंग है, जितनी कि अन्य कोई भी और चीज। आज फिल्में किशोर मस्तिष्कवाले समस्त पुरूष–नारियों युवा–युवतियों, बालक–बालिकाओं को प्रभावित करने का सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम है। ऐसी स्थिति में यदि फिल्मों की विसंगतियों पर व्यंग्य नहीं किया जाएगा तो हम समाज में महत्वपूर्ण अंग की उपेक्षा करेंगे।[65]

व्यंग्य का महत्व :–

साहित्य में व्यंग्य–रचनाओं का महत्व स्वत:सिध्द है। व्यंग्यकार गर्हणा तो करता है पर बड़े कौशल से। वह कटाक्षों का प्रयोग करता है, पार्श्व से आघात करता है और सबके द्वारा आपत्तिजनक विचारधारा गर्हणीय व्यक्ति को परास्त करने का प्रयत्न करता है।[66] व्यंग्य रचनाएँ उद्देश्य और शैली दोनों ही दृष्टियों से उच्चतर साहित्य के अनुकूल हैं। आज समाज व्यवस्था और शासनतंत्र शुरू से लेकर आखिर तक भ्रष्ट, कलुषित और अमानुषिक है तो क्रांतिकारी साहित्य और व्यंग्य साहित्य की अधिक आवश्यकता है।[67]

व्यंग्य में रोचकता और सुन्दरता कम नहीं होती। व्यंग्य में कौशल से सबसे अधिक काम लिया जाता है और जहा भी कौशल का अधिकाधिक उपयोग होगा, वहां सुन्दरता और रोचकता आएगी ही। आज के व्यंग्य पहले के व्यंग्य की तुलना में भिन्न प्रकार के हैं इसे ही व्यंग्यकारों ने व्यंग्य के नये आयाम, नये रूप माने हैं। व्यंग्य के बदलते हुए रूप के पीछे युग के दबाव ओर प्रहार हैं। यह जो तनाव है वह युगीन तनाव है और यह स्वाभाविक ही है।[68]

आज की व्यंग्य–रचनाएं युगीन यथार्थ से प्रभावित हैं। व्यंग्य–रचनाएं किसी–न–किसी रूप में युगीन विरूपता पर, विकृति और असंगति पर प्रहार करती हैं।[69] रामशेर बहादुरसिंह के शब्दों में – "मुझे तो उद्देश्यपरक साहित्य प्रायः पसन्द है। मैं जानबूझकर उसकी कलात्मक खामियों को नजरअन्दाज कर जाता हूँ अगर उसमें मानवतावादी आस्था और विश्वास के स्वर सचमुच विशेष दृढ और सच्चे है और शैली में व्यक्तित्व का बीज है।[70] आज समाजवादी समाज–व्यवस्था के बाद भी समस्याएं बनी रहेगी, और उन्हें सुधारने के लिए, या उनसे जूझने के लिए लोगों को तत्पर रहना होगा। इसलिए इस दशा में व्यंग्यकार की भूमिका कभी समाप्त नहीं होनेवाली।[71]

<u>व्यंग्य की सीमाएँ</u> :–

प्रत्येक प्राणी, वस्तु, साहित्य तथा पदार्थों की कार्य सिद्धि एवं अस्तित्व की कुछ सीमाएँ होती हैं। उसी प्रकार से हिंदी व्यंग्य की भी कुछ सीमाएँ हैं। व्यंग्य विकृति, विसंगति, दोष, कुंठा, अन्याय एवं अत्याचार से परिपूर्ण आलम्बन पर प्रहार करता है, समाज की नजरों में गिराता है, अपमानिक करता है। इतनें वर्षों से व्यंग्य लिखा जा रहा है फिर भी समाज, राजनीति, प्रशासन, धर्म, संस्कृति, शिक्षा आदि क्षेत्रों से दोष दूर नहीं हो रहे हैं क्योंकि व्यंग्य की भी अपनी कुछ सीमा है। विशेषतः निम्न दोष तथा कमजोरियाँ हिंदी व्यंग्य में पाई जाती हैं :–

1. विषयों की आवृत्ति
2. पात्रों की पुनरावृत्ति
3. अतिसामयिकता
4. स्तरहीन हास्य का उपयोग

5. चुटकुलेबाजी

6. भाषिक स्खलन

7. निबन्ध अथवा कहानी की ओर झुकाव

8. सफेदपोश व्यंग्यकार ।[72]

व्यंग्य की सीमा यानी व्यंग्यकारों की ही सीमा हो सकती है, व्यंग्यकार मनुष्य है, मनुष्य के विचार चंचल तथा दुर्बल भी हो सकते हैं, अतः वह प्रवाह पतित होकर अन्य किसी भी विधा में घुसकर व्यंग्य को कमजोर करेगा, ऐसी सम्भावना है। अतः व्यंग्यकारों का ही संचेतना से दूर की सूझबूझ के साथ, परिवेशपूर्ण तादात्म्य प्रस्थापित कर व्यंग्य का निर्माण करना है।[73]

व्यंग्य अगर अनेक तरह से तीक्ष्ण शस्त्र के समान प्रहार करता रहेगा तो व्यंग्य का भविष्य उज्ज्वल है। नहीं तो व्यंग्य की सीमाओं में जिन तथ्यों का वर्णन किया गया वे अगर जारी रहीं तो व्यंग्य अपनी प्रतिष्ठा खो देगा। इन स्थितियों से अगर व्यंग्य बचे तो हिंदी व्यंग्य का भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल है।[74]

<u>व्यंग्य का भविष्य</u> :-

व्यंग्य के भविष्य के बारे में अजातशत्रु का मत देखिए – "मैं समझता हूँ व्यंग्य का भविष्य काफी उज्ज्वल है। वह विधा के रूप में अब ही उभरकर सामने आया है। अगर हम सभी व्यंग्यकार अपनी लेखकीय ईमानदारी से, विश्व के श्रेष्ठ व्यंग्य–साहित्य का अध्ययन करते हुए, और उससे दृष्टि प्राप्त करके अपनी स्वतंत्र व्यंग्य–दृष्टि बनाते हुए, व्यंग्य–लेखन करते हैं और उस व्यंग्य लेखन को रचनात्मक निर्वाह के साथ, आज के प्रश्नों से जोड़ते हैं तो निश्चय ही यह निरर्थक नहीं जायेगा। शायद भारतीय इतिहास में यह पहला मौका है जब हमारा देश वेदांत दर्शन जीवन की नश्वरता के विचार और नश्वरता के विचार और परमात्मा तथा आत्मा के ऊँचे प्रश्नों से टूटकर जीवन के प्रश्नों से जुड़ा है और यह महसूस कर सका है कि जमीन की हालातों को सुधारे बिना आध्यात्मिक दुनिया का स्वप्न बेकार है, भले ही वह स्वप्न भौतिक संपन्नता के बाद कितना महत्वपूर्ण हो । यानी, अब लोग भी मानने लगे हैं कि व्यंग्य पीड़ा में से उपजता है, और वह सिर्फ फन के लिए नहीं लिखा जाता।75

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर निष्कर्षता कहा जा सकता है कि –

1. व्यंग्य अंग्रेजी के Satire का हिंदी अनुवाद है।
2. मानव जीवन में व्यंग्य का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य समाज में सुधार लाना है।
3. व्यंग्य साहित्यिक विधा है। साहित्य की अन्य नई विधाओं संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा साहित्य, पत्र, फीचर, परिचर्चा, पोस्टर आदि की भाँति व्यंग्यविधा भी एक नई साहित्यिक विधा है।
4. व्यंग्य और हास्य का घनिष्ठ संबंध है। यद्यपि व्यंग्य में समाज की कुरीतिओं को दूर करना अवश्यंभावी माना गया है फिर भी उसमें आवश्यक हास्य का पुट भी अपेक्षित है।
5. व्यंग्य व्यंग्यकार की भावाभिव्यक्ति का सबल माध्यम है।
6. व्यंग्य में भाषा का विशेष महत्व है। व्यंग्य की भाषा एक ऐसी भाषा होती है कि जिसपर व्यंग्य किया जाता है उसको वह जरूर चुभती है। लेकिन खून नहीं निकालती है। व्यंग्य की भाषा अहिंसात्मक व्यंग्यबाण की भाषा है।
7. हिंदी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र से आधुनिक साहित्य में व्यंग्य का प्रचलन हुआ और वह अधिकाधिक प्रतिष्ठा पा रहा है। साठोत्तर हिंदी व्यंग्य साहित्य में डॉ.प्रभाकर माचवे, बरसानेलाल चतुर्वेदी, हरिशंकर परसाई, बालेंदुशेखर तिवारी इत्यादि महत्वपूर्ण व्यंग्यकार हैं। हिंदी के व्यंग्यसाहित्य का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ :-

1. हिंदी साहित्य कोष भाग – 1 प्रधान संपा. धीरेन्द्र वर्मा, द्वितीय संस्क. – संवत् 2020, पृ.805
2. गद्य की नयी विधायें, संपा.डॉ.माजदा असद, प्र.संस्क. 1990, पृ.26,27
3. The Concise OXFORD Dictionary, Ed. R.E.ALLAN Eighth Edition 1990, Page - 1072
   Satire / saetara(r)n. 1 the use of ridicule, irony, sarcasm etc., to expose folly or voice or to lampoon an individual , 2. a work or composition in prose or verse using satire, 3. this branch of literature, 4. a thing that brings ridicule upon something else.
4. Merriam Webster's Collegiate Dictionary, Editor in Chief - Fredrick C. Mish, 10th Ed. 1995, Page-1038
   1 : a literary work holding up human vices and follies to ridicule or scorn, 2: trenchant wit, irony . or sarcasm used to expose and discredit vice or folly.
5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, प्र.संस्क. 1985, पृ.50
6. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, चौथा संस्क., 1987, पृ.143
7. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, प्र.संस्क. 1985, पृ.50
   (वीरेंद्र मेंहदीरत्ता : "आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य", पृ.8)
8. व्यंग्य का व्यंग्य क्यों, श्यामसुन्दर घोष, संस्क. 1996, पृ.129
9. व्यंग्य–विवेचन, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, प्र.संस्क. 1996, पृ.27
10. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ. 33
11. वही, पृ.34

12. शरद जोशी : एक यात्रा, संपा.डॉ.शशि मिश्र, प्र.संस्क.1993, पृ.169
(परसाई और जोशी, डॉ.संतोषकुमार तिवारी का लेख)
13. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, शरद जोशी, 1980, अपनी बात
14. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क. 1990, पृ.146
15. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ.146, 147 (दूसरी सतह, शरद जोशी, 1968, पृ.88)
16. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ.147
17. वहीं, पृ.147
18. वहीं, पृ.147
19. वहीं, पृ.147
20. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र ओर इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990,पृ.36–37
21. वहीं, पृ.38
22. वहीं, पृ.38
23. वहीं, पृ.38, 39
24. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, प्र.संस्क.1996, पृ.115
(व्यंग्य और व्यंग्य–विधा – डॉ.श्यामसुन्दर घोष
25. वहीं, पृ.116–118
26. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, प्र.संस्क.1985, पृ.54
27. वहीं, पृ.54–55
28. वहीं, पृ.54–55
29. वहीं, पृ.54–55
30. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, पृ.55
(वीरेंद्र मेहंदीरत्ता : "आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य", अध्याय 1)
31. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, श्यामसुन्दर घोष, संस्क.1996, पृ.119

32. वही, पृ.120

33. वहीं, पृ.121

34. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ.215

35. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, श्यामसुन्दर घोष, संस्क. 1996, पृ.60

(भावाभिव्यक्ति का माध्यम : व्यंग्य – डॉ.महेन्द्र भटनागर)

36. वही, पृ.60

37. वहीं, पृ.61

38. वही, पृ.61, 62

39. वही, पृ.62–63

40. वहीं, पृ.60

41. वही, पृ.62

42. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ.207

(इस देश के लोग, रवीन्द्रनाथ त्यागी, 1982, पृ.98)

43. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ.207

44. वही, पृ.209, 210

(मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, हरिशंकर परसाई, 1977, पृ.44)

45. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, श्यामसुन्दर घोष, प्र.संस्क.1996, पृ.144

(डॉ.प्रभाकर माचवे, व्यंग्य का चरित्र)

46. व्यंग्य–विवेचन, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, प्र.संस्क. 1994, पृ.89

47. वही, पृ.89

48. वहीं, पृ.90

49. वही, पृ.118

50. वहीं, पृ.119

51. वही, पृ.121

52. वही, पृ.88

53. वही, पृ.88

54. वही, पृ.89

55. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, संस्क.1985, पृ.28
(प्रेमनारायण टंडन (संपा.),"हिंदी साहित्य में हास्य और व्यंग्य., हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1961, अध्याय एक और दो)

56. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, संस्क.1985, पृ.28
(हरिशंकर परसाई, "सदाचार का तावीज" (कैफियत))

57. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, संस्क.1985, पृ.27, 28

58. वही, पृ.28

59. गद्य की नई विधाओं का विकास, प्रो.माजदा असद, संस्क.1991, पृ.112

60. साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ, डॉ.कैलाश चन्द्र भाटिया, प्र.संस्क.1996, पृ.95

61. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, 1985, पृ.55
(वीरेंद्र मेहंदीरत्ता : "आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य", अध्याय 1)

62. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, संस्क.1985, पृ.55

63. वही, पृ.57

64. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य, उषा शर्मा, संस्क.1985, पृ.58.
(वीरेंद्र मेहंदीरत्ता : "आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य, अध्याय 1)

65. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, श्यामसुन्दर घोष, प्र.संस्क.1996, पृ.107, 108
(नरेन्द्र कोहली – व्यंग्य–लेखन : व्यंग्यकार की नजर में)

66. व्यंग्य–विवेचन, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, संस्क.1994, पृ.17
(मानविकी पारिभाषिक कोश, साहित्य खंड, सम्पा.डॉ.नगेन्द्र, पृ.228)

67. व्यंग्य–विवेचन, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, संस्क.1994, पृ.17

68. वही, पृ.17, 18

69. वहीं, पृ.18

70. व्यंग्य–विवेचन, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, संस्क.1994, पृ.17 (आलोचना, अंक 39, पृ.137)

71. व्यंग्य–विवेचन, डॉ.श्यामसुन्दर घोष, संस्क.1994, पृ.19

72. हिंदी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास, डॉ.बापूराव देसाई, प्र.संस्क.1990, पृ.257–259.

73. वही, पृ.266

74. वही, पृ.267

75. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों, श्यामसुंदर घोष, संस्क.1996, पृ.51–52